1

यारोबाम (1)

चढ़ता तारा जो डूब गया

वचन पाठ: 1 राजाओं 11:26-39; 12:1-14:20

कुछ लोग जन्म से ही लीडर होते हैं। चुने गए हों या न, यदि उन्हें किसी भी प्रकार की सभा या किसी भी प्रकार के समूह में लगा दिया जाए तो वे उसके मुख्या बन जाएंगे। वे भीड़ में से ''प्रमुख'' बनकर निकल आते हैं। उदाहरण के लिए शमौन पतरस प्रेरितों के झुण्ड में एकदम से बोलने वाला, जवाब देने वाला या निर्णय देने वाला व्यक्ति था। वह ऐसा ही था, जैसा कि हम कई बार कहते हैं, ''वह काम में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था।'' वह कुछ कहने या कुछ करने वाला होता था, चाहे वह गलत ही हो। उसे आगे आना ही होता था। उसे अगुआई करनी होती थी।

यारोबाम ऐसा ही व्यक्ति होगा। उसमें ऐसे व्यक्ति के गुण थे, जो दूसरों की अगुआई अच्छी तरह करने के लिए आवश्यक हैं। इस पाठ में हम इन गुणों में से तीन का अध्ययन करेंगे। उसमें *धार्मिक निष्ठा* का गुण नहीं था, पर यही गुण मुख्य था। कितने दु:ख की बात है! उसने पाया कि जीवन के गुणों में तीन में से एक घटाने पर शून्य मिलता है। बिना धार्मिक निष्ठा के वह शून्य था। वह उस चढ़ते तारे के समान है, जो जल्दी से बुझ जाता है।

उसके जीवन की कहानी के आरम्भिक पृष्ठों को ध्यान से देखें। उसे हम सही गुण के बजाय सब गुण होने की कोशिश करने की चेतावनी देने दें।

महत्वाकांक्षी आत्मविश्वास

> ... नबात ... पुत्र यारोबाम नामक एक एप्रैमी सरेदा वासी, जो सुलैमान का कर्मचारी था, ... (11:26)।

यारोबाम का पहला प्रशंसनीय गुण आश्वासन था। वह एप्रैम के गोत्र का महत्वाकांक्षी, पदमुक्त, आत्मविश्वास से भरा युवक था। शायद उसे कुछ आत्मविश्वास गोत्रीय वंशावली में से और उन संगठनों से मिला था, जिनके साथ उनका सम्बन्ध था। एप्रैम एक गौरवमय और ऐतिहासिक गोत्र था। वे इस बात पर गर्व कर सकते थे कि इस्राएल के महानतम अगुओं में से यहोशू उन्हीं के गोत्र में से था। इसके अलावा वे कह सकते थे कि तम्बू का पहला स्थान, शीलो उन्हीं के इलाके में था। उनका एक लम्बा, गौरवमयी इतिहास था, और अपने लिए उनकी अपेक्षाएं बहुत अधिक थीं। इस कारण वे उन्हें दी गई भूमि को अपनी शान से कम और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए थोड़ी मानते थे। जब यहोशू ने उन्हें उनका इलाका दिया था, तो उन्होंने उसे कड़वे बोलों के साथ खरी-खोटी सुनाई थी, ''हम तो गिनती में बहुत हैं, क्योंकि अब तक यहोवा

हमें आशीष ही देता आया है, फिर तू ने हमारे भाग के लिए चिट्ठी डालकर क्यों एक ही अंश दिया है?'' (यहोशू 17:14)।

यारोबाम का गोत्र चाहे जो भी था, परन्तु उसके आत्मविश्वास ने उसे अपने घरेलू जीवन में विनाश के बावजूद स्थिर रखा था। उसके बचपन में कहीं सुलैमान के राज्य में अधिकारी उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। माता-पिता की हानि किसी बच्चे के लिए भूकम्प जैसी हो सकती है, जो उसके जीवन पर कायरता और अनिश्चितता का दाग छोड़ सकती है। जहां तक हम बता सकते हैं, यारोबाम के साथ ऐसा नहीं हुआ था। शोक से उसकी हिम्मत नहीं टूटी। पहली बार वचन में से उसके बारे में पढ़ने पर हमें वह एक दृढ़, साहसी और निर्विरोध मिलता है।

आत्मविश्वास एक आवश्यक गुण है। यदि घमण्ड में परिवर्तन हो तो यह एक सम्पत्ति हो सकता है। आत्मविश्वास वाले गुणी व्यक्ति की सराहना की जाती है जबकि घमण्ड से भरे गुणी व्यक्ति से हर कोई घृणा करता है। आत्मविश्वास से कोशिश करने वालों को साहस मिलता है, जबकि घमण्डी या अहम से भरा मन लज्जाजनक पतन की ओर बढ़ रहा होता है।

सराहनीय खूबी

> यारोबाम बड़ा शूरवीर था, और जब सुलैमान ने जवान को देखा, कि यह परिश्रमी है; तब उस ने उसको यूसुफ के घराने के सब काम पर मुखिया ठहराया (11:28)।

यारोबाम की दूसरी खूबी उसकी प्रतिभा थी। वह कर्मचारी ही नहीं, बल्कि असाधारण कर्मचारी यानी एक प्रतिभावान कर्मचारी था। उसमें यह खूबी थी कि दूसरों की नज़र उस पर पड़ सके। उसकी लगन और काम करने की आदतों ने उसे ऐसा रुतबा दिलाया कि वह न केवल अपने सर्वेक्षकों की नजर में चढ़ गया बल्कि राजा को भी पसन्द आया। काम में श्रेष्ठता के आधार पर उसे सुलैमान के शासन में अधिकारी का पद दिया गया; उसे यूसुफ के घराने पर कर्मचारियों पर निगरान के रूप सेवा करनी थी।

खूबी प्रशंसनीय भी होती है। अफसोस उस व्यक्ति पर जो बिना इसके अगुआई करने की कोशिश करता है। हमें याद रखना चाहिए कि खूबी या अपना कोई चरित्र नहीं है। यह धन की तरह है। इसे चरित्र उस व्यक्ति से मिलता है, जिसके पास यह है। प्रतिभा का महत्व तभी है, यदि इसे धर्मी मन द्वारा संभाला जाए।

आकर्षक व्यक्तित्व

> यह सुनकर कि यारोबाम लौट आया है, समस्त इस्राएल ने उसे मण्डली में बुलवा भेजकर, पूर्ण इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त किया, ... (12:20)।

यारोबाम की तीसरी विशेषता यह थी कि उसमें वह बात थी, जिसे ''करिश्माई'' या ''चुम्बकीय व्यक्तित्व'' कहा जाता है। वह ऐसा व्यक्ति था, जिसके पीछे लोग चलना चाहते हैं।

लोगों का उसमें विश्वास था। जब वह बात करता था तो लोग उसकी सुनते थे। जब उन्हें राजा की आवश्यकता पड़ी तो वह उनकी पहली पसन्द था।

आकर्षक व्यक्तित्व निश्चय ही एक आशीष है। विकर्षक व्यक्तित्व के कारण कोई भी काम में असफलता नहीं चाहता। लोग किसी प्रयास को नकार सकते हैं क्योंकि उन्हें इसकी उपयोगिता नहीं लगती। ठीक है। यह पर्याप्त कारण है। फंड या ऊर्जा की कमी के कारण लोग किसी काम में आगे बढ़ने से इनकार कर सकते हैं। वह भी पर्याप्त कारण है पर यदि वे किसी भले कार्यों को इसलिए करने से इनकार कर दें कि उन्हें इसका प्रस्ताव रखने वाले का व्यक्तित्व पसंद नहीं है तो यह बड़ा ही दु:खद होगा। यह उस काम की सच्चाई के कारण नहीं, बल्कि उस पैकिंग पेपर के कारण असफल होगा, जिसमें से प्रस्तुत किया गया।

सच्चाई के सुने जाने के लिए आकर्षक व्यक्तित्व सहायक हो सकता है। नहीं, लोगों के लिए केवल व्यक्तित्व को देखकर बात को मानना अच्छा नहीं है; हम सच्चाई को इसकी सच्चाई के कारण आकर्षक व्यक्तित्व के द्वारा प्रस्तुत की गई और स्वीकारयोग्य बनाना चाहते हैं, न कि इसे प्रस्तुत करने वाले के कारण। परन्तु और भी बातें इतनी ही आवश्यक हो सकती हैं। अच्छा व्यक्तित्व सच्चाई को प्रस्तुत करने में सहायक होगा।

यारोबाम में कुछ ऐसी बातें थी, जिनकी हम सब सराहना करते हैं, जैसे आत्मविश्वास, प्रतिभा और आकर्षक व्यक्तित्व। हम कहते हैं, ''अगुआई करने वाले में इतनी ही बातें होना काफी है।'' सचमुच? आइए देखते हैं कि यारोबाम ने उससे जो उसके पास था, क्या किया।

एक दिन यरूशलेम से बाहर जाते हुए यारोबाम को अहिय्याह भविष्यवक्ता मिला। उसने आने वाली एक भविष्यवाणी के रूप में अपनी उस चादर को जो उसने ओढ़ी हुई थी, लेकर उसके बारह टुकड़े कर दिए। उसने यारोबाम से कहा:

> दस टुकड़े ले ले;[1] क्योंकि, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से छीन कर दस गोत्र तेरे हाथ में कर दूंगा (11:31)।

दो गोत्रों को दाऊद के कारण रखा जाना था (11:32), पर परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनकी मूर्तिपूजा पर न्याय के रूप में इस विभाजन की अनुमति देनी थी। याद रखें कि जो भी घटता है वह यूं ही नहीं घट जाता। या तो परमेश्वर इसे घटने की अनुमति देता है या इसे घटने देता है पर यूं ही कुछ भी नहीं घटता। इस मामले में परमेश्वर ने विभाजन होने की अनुमति दी।

यारोबाम ने देश की अगुआई के अवसर का लाभ उठाना था। शायद सिंहासन ही वह चीज़ थी, जिसे वह हमेशा से चाहता था। सूरज में उसका समय आ गया था। परमेश्वर उसे सबसे महत्वपूर्ण पद सौंप रहा था। उसने इसके साथ क्या करना था?

अहिय्याह द्वारा यारोबाम को कही बात सुलैमान ने अवश्य सुनी होगी, क्योंकि तुरन्त उसने उसे मार डालने की कोशिश की। किसी प्रकार यारोबाम सुलैमान से बचकर मिस्र में भागने में सफल रहा, जहां उसे शीशक के यहां शरण मिली। वह सुलैमान के मरने तक मिस्र की सुरक्षा में रहा।

सुलैमान के मरने पर, इस्राएली सुलैमान के पुत्र रहूबियाम को अगले राजा के रूप में मुकुट

पहनाने के लिए शकेम में इकट्ठे हुए। सुलैमान की मृत्यु का समाचार सुनकर और मिस्र से वापस लौटकर यारोबाम इस्राएलियों के साथ अपने नये राजा रहूबियाम से लोगों पर बोझ कम करने के लिए शकेम में गया। रहूबियाम ने उन्हें तीन दिन बाद उसका उत्तर पाने के लिए प्रतीक्षा करने को कहा। इन तीन दिनों में रहूबियाम ने इस्राएल के प्राचीनों (बुजुर्गों) से परामर्श किया कि क्या किया जाए और उन्होंने कहा कि ''ऐसा ही कर। उनका बोझ हल्का कर दे।'' उसने अपने साथी युवाओं से बात की और उन्होंने कहा, ''न कर। उनके साथ सख्ती करके उन पर राज कर। तेरी छिंगुली भी सुलैमान की कमर से मोटी हो। तेरे पिता ने तुम पर जो भारी जुआ रखा था, उसे तू और भी भारी कर; तेरा पिता तो उनको कोड़ों से ताड़ना देता था, परन्तु तू बिच्छुओं से दे'' (12:11)। रहूबियाम ने मूर्खतापूर्वक जवान लोगों की सलाह मानी। उसके अपना निर्णय सुनाने के बाद अहिय्याह की भविष्यवाणी के अनुसार राज्य में फूट पड़ने लगी। ग्यारह गोत्र यारोबाम के साथ चले गए और यहूदा का गोत्र रहूबियाम के साथ रहा।

रहूबियाम और उसका प्रधान कर इकट्ठा करने वाला अदोनीराम मामला स्पष्ट करने और लोगों को यह बताने के प्रयास में अन्य गोत्रों के पास गया; पर असंतुष्ट लोगों ने अदोनीराम पर पथराव किया और रहूबियाम अपनी पत्नी के साथ बाल-बाल बचा। रहूबियाम यरूशलेम में भाग गया जहां उसने यहूदा और बिन्यामीन के घरानों को[2] युद्ध के लिए इकट्ठा किया। यहूदा और बिन्यामीन से उसने 1,80,000 योद्धा इकट्ठे कर लिए। यदि वह उत्तरी गोत्रों से अधीनता न मनवा पाता तो उसने उन्हें जबर्दस्ती अधीन कर लेना था। यदि वह उन्हें आज्ञा न दे पाता तो उसने उन्हें बलपूर्वक मनवा लेना था। जब बातचीत से बात न बने तो कुछ लोग तलवार का इस्तेमाल करने का मन बना लेते हैं।

शमायाह नामक नबी को परमेश्वर की ओर से रहूबियाम को संदेश देने के लिए भेजा गया कि ''अपने भाइयों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो। तुम अपने अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है। ...'' (2 इतिहास 11:4)। परमेश्वर इस फूट का इस्तेमाल अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कर रहा था। शमायाह की बात का अर्थ यह नहीं है कि फूट परमेश्वर की इच्छा थी। अलगाव का कारण तो पाप था, परन्तु परमेश्वर अहिय्याह द्वारा की गई भविष्यवाणी को पूरा कर रहा था (2 इतिहास 10:15)। रहूबियाम ने शमायाह की बात सुनी और अपनी सेना को घर भेज दिया।

फूट अन्तिम थी। इसके बाद इस्राएल के दो राजा और दो राज्य होने थे। ग्यारह गोत्र अपने राज्य के लिए राजा चुनने के लिए इकट्ठा हुए। सर्वसम्मति से यारोबाम को चुन लिया गया।

> यह सुनकर कि यारोबाम लौट आया है, समस्त इस्राएल ने उसे मण्डली में बुलवा भेजकर, पूर्ण इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त किया, और यहूदा के गोत्र को छोड़कर दाऊद के घराने से कोई मिला न रहा (12:20)।

यारोबाम अब लालची नेतृत्व की स्थिति में था। यारोबाम ने कैसा राजा होना था? हम इस अगुवे से क्या सीख सकते हैं? यारोबाम में प्रतिभा, करिश्मा और आत्मविश्वास था, पर हम देखेंगे कि उसमें अच्छे नेतृत्व की आवश्यक बात यानी निष्ठा की कमी थी।

इस्राएल के चुनिन्दा लोगों द्वारा शकेम में आरम्भ करने के बाद (12:20), उसने शकेम और पनुएल को अपनी दो राजधानियां बना लिया, जिनमें एक यरदन के पश्चिम में और दूसरी पूर्व में थी (12:25)। अपना निवास उसने सुन्दर नगर तिरज़ा में बनाया (14:17)। उसे यकीन था कि परमेश्वर की व्यवस्था के आज्ञा पालन का प्रतिफल उसके राज्य और राजघराने की स्थापना के रूप में मिलेगा। अहिय्याह द्वारा उसे बताया गया था कि परमेश्वर उससे क्या चाहता था:

> और यदि तू मेरे दास दाऊद की नाई मेरी सब आज्ञाएं, और मेरे मार्ग पर चले, और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है, वही करे, और मेरी विधियां और आज्ञाएं मानता रहे, तो मैं तेरे संग रहूंगा, और जिस तनह मैं ने दाऊद का घराना बनाए रखा है, वैसे ही तेरा भी घराना बनाए रखूंगा, और तेरे हाथ इस्राएल को दूंगा (11:38)।

यारोबाम ने क्या किया? क्या उसने परमेश्वर के भविष्यवक्ता की बात नहीं मानी। वह तुरन्त इस्राएल को पाप में ले गया। उसने जल्द ही दिखा दिया कि उसके पास सब कुछ था, पर परमेश्वर द्वारा स्वीकृत नेतृत्व में व्यक्ति को परमेश्वर की आज्ञाओं में चलने के लिए लोगों को प्रेरित कर सकने वाला मन होना आवश्यक है।

सारांश

किसी न किसी रूप में, पुराना नियम पच्चीस बार यारोबाम के लिए कहता है कि ''उसने इस्राएल से पाप करवाया।'' डब्ल्यू.ग्राहम स्क्रोजी ने लिखा:

> किसी भी मनुष्य के लिए सबसे बुरी बात जो कही जा सकती है कि वह यह है कि उसने निरन्तर पाप किया है और दूसरों से करवाया है; ऐसी बात जो ''नबात के पुत्र यारोबाम'' के लिए पच्चीस बार कही गई है। किसी मनुष्य को इससे बढ़िया अवसर कभी नहीं मिला और न किसी ने इतनी दुष्टता से उसे फैंका है। उसे बताया गया था कि वह उन सब बातों पर ध्यान दे, जो परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी और उसके मार्गों में चले और वही करे जो उसकी दृष्टि में सही था और उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन करे, तो परमेश्वर उसके साथ होगा और उसके लिए वैसे ही घर बनाएगा जैसे उसने दाऊद के लिए बनाया था और इस्राएण्लन को उसे दे देगा (1 राजाओं 11:38)। इससे बढ़कर क्या चाहिए? तौ भी यारोबाम ने जान-बूझकर और निरन्तर पाप करके और इस्राएल से पाप करवाकर इसे फैंक दिया।[3]

यदि यारोबाम ने अपने आप से पूछा होता, ''मैं इस्राएल को कहां ले जा रहा हूं?'' तो उसका उत्तर यही होना था, ''मैं इस्राएल को भयंकर तबाही अर्थात आत्मिक विनाश की ओर ले जा रहा हूं।'' आत्मविश्वास, प्रतिभा और करिशमाई व्यक्तित्व को यदि स्वार्थ, पापपूर्ण कार्यों में गंवा दिया जाए जो आशीष के बजाय विनाश बनता है तो इसका कोई लाभ नहीं।

सीखने के लिए सबक:
महल में रहने के बजाय धर्मी, दीन मन होना बेहतर है।

टिप्पणियां

[1]यहां हमें पहला संकेत मिलता है कि दो गोत्रों ने मिलकर दक्षिणी राज्य बनना था। वास्तविक फूट में ऐसा लगता है जैसे ग्यारह गोत्र पीछे हट गए परन्तु बाद में बिन्यामीन वापस आकर यहूदा के साथ आकर खड़ा हो गया। [2]स्पष्टतया बिन्यामीन यहूदा के साथ खड़ा होने के लिए वापस आ गया था। शायद बिन्यामीन के मन में फूट के बाद यारोबाम के साथ जाकर यहूदा से मिल जाने का विचार था। [3]डब्ल्यू. ग्राहम सक्रोजी, द *अनफोल्डिंग ड्रामा ऑफ रिडैंप्शन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1976), 299.